ISSN 2231-5063 IMPACT FACTOR : 3.4052(UIF) | VOLUME-4 | ISSUE-9 | MARCH-2015

GOLDEN RESEARCH THOUGHTS

विद्यार्थियों में विलम्बन व्यवहार : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

ज्योति कंसल [1] , कविता मित्तल [2]

[1] एम.ए. (अर्थशास्त्र), बी.एड., एम.एड. , नेट , शोधकर्त्री , शिक्षा संकाय , वनस्थली विद्यापीठ ,वनस्थली, टोंक (राजस्थान)

[2] एम.ए. (मनोविज्ञान), बी.एड., एम.एकृ , एसोसिएट प्रोफेसर , शिक्षा संकाय , वनस्थली विद्यापीठ ,वनस्थली, टोंक (राजस्थान)

सारांश :-

विलम्बन व्यवहार मानव के व्यक्तित्व में पाए जाने वाले विभिन्न गुणों में से एक है। विलम्बन व्यवहार के अन्तर्गत मानव अपनी इच्छानुसार अपने कार्यों को प्राथमिकता क्रम प्रदान करता है। वह सरल व आनन्दायक कार्यों को करने में व्यस्त रहता है तथा कठिन व कष्टादायक कार्यों का वह स्थगन करता रहता है। विद्यार्थियों में यह व्यवहार सर्वाधिक पाया जाता है क्योंकि वे उन कार्यों को प्राथमिकता देते हैं जो उन्हें सरल लगते हैं व जिनमें उन्हें आनन्द की प्राप्ति होती है व कठिन कार्यों को वे कल पर टालते रहते हैं। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में लिंग–भेद व विषय–वर्ग के आधार पर विलम्बन व्यवहार का अध्ययन किया गया है। साथ ही साथ विलम्बन व्यवहार के प्रति विद्यार्थियों में स्व–जागरुकता व विलम्बन व्यवहार के प्रमुख कारणों की पहचान करने का प्रयास इस अध्ययन में किया गया है।

मुख्य शब्द – विलम्बन व्यवहार .

विद्यार्थियों में विलम्बन व्यवहार : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

कल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
कल को परलय हो गयी, बहुरि करेगो कब।।

उक्त पंक्तियाँ हिन्दी के प्रसिद्ध कवि कबीरदास की है जिनके द्वारा कबीरदास का मानव व्यवहार के संदर्भ में गहन अध्ययन व संवेदनशीलता का परिचय प्राप्त होता है। साथ ही साथ यह दोहा मानव स्वभाव के एक विशिष्ट गुण की ओर भी इंगित करता है जिसे कार्य–स्थगन व्यवहार/विलम्बन व्यवहार कहा जा सकता है। प्राचीन काल में भी मानव अपने कार्यों को कल पर या आगामी समय पर टाल देता था। अतः कार्य–स्थगन व्यक्ति व्यवहार की एक प्रमुख समस्या कल भी थी और आज भी विद्यमान है।

वर्तमान में मनोवैज्ञानिकों ने मानव में पायी जाने वाली कार्य–स्थगन की प्रवृत्ति को विलम्बन प्रवृत्ति (Procrastination Tendency) कहा है तथा इस प्रवृत्ति को दर्शाने वाले व्यवहार को विलम्बन व्यवहार (Procrastination Behaviour) कहा है। अंग्रेजी शब्द Procrastination की उत्पत्ति लैटिन शब्द Procrastinare से है। जिसमें Pro का अर्थ है– आगामी गतियाँ तथा Crastinare का अर्थ है– कल से सम्बन्धित। अतः Procrastination (विलम्बन) से तात्पर्य उन गतियों से है जिन्हें आगामी कल से सम्बन्धित कर दिया जाता है।

धार्मिक रूप से मानव की कार्य को टालने की प्रवृत्ति की व्याख्या श्रीमद्भगवद्गीता (गांधी, स्ट्रोहमरीएर, नागलग 2000) से प्राप्त हुई है। श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है, "अनुशासनहीनता, हठधर्मिता, अकृत्थकारिता, आलस्य, अवसाद–ग्रस्तता तथा स्थगन, ये सभी तामसिक प्रवृत्ति के कारक हैं।" इस प्रकार श्रीकृष्ण भगवान ने भी स्थगन की प्रवृत्ति (कार्य को स्थगित करने की प्रवृत्ति) को मानव की नकारात्मक प्रवृत्तियों में एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति माना है।

सिगमण्ड फ्रायड के 'आनन्द सिद्धान्त' (HedonisticTheory) के आधार पर विलम्बन व्यवहार को स्पष्ट किया जा सकता है। फ्रायड के इस सिद्धान्त के अनुसार, व्यक्ति नकारात्मक संवेगों वाले तथा तनावपूर्ण कार्यों से दूर रहना चाहता है और वह आनन्दायक कार्यों को करने में ही अपना समय व्यतीत करता है। विलम्बन व्यवहार का कारण भी यह है कि मानव उन कार्यों को करने में व्यस्त रहता है जो सरल होते है तथा जिनसे उसे आनन्द की प्राप्ति होती है। जो कार्य कठिन व कष्टदायक होते हैं उन्हें वह आगामी दिनों पर टालता रहता है। इस प्रकार फ्रायड का सुखवाद का सिद्धान्त मानव के विलम्बन व्यवहार की प्रवृत्ति को स्पष्ट करता है।

विलम्बन व्यवहार मानव की एक अर्जित प्रवृत्ति है। मानव विकास की सभी अवस्थाओं से सम्बन्धित होने के बाद भी यह किशोरावस्था व व्यस्कावस्था में प्रमुखतः दृष्टिगोचर होता है। इस व्यवहार में वैयक्तिक भिन्नता पायी जाती है तथा अर्जित गुण होने के कारण विलम्बन व्यवहार पर वातावरण का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। विलम्बन प्रवृत्ति वाला व्यक्ति असंवेदनशील हो जाता है। वह किसी भी कार्य की आवश्यकता व गम्भीरता को नहीं समझता तथा उसमें कार्य के प्रति आलस्य का भाव पाया जाता है।

मानव में विलम्बन व्यवहार विभिन्न कारणों से पाया जाता है। उपलब्ध समय को सही से व्यवस्थित न कर पाना, प्राथमिकता क्रम का निर्धारण न कर पाना, विशेष समयावधि पर अत्यधिक कार्य दबाव, बहुत अधिक पूर्णतावादी होना, कार्य के प्रति बहुत अधिक चिन्ता होना आदि मानव में पाए जाने वाले विलम्बन व्यवहार के मुख्य कारण हो सकते हैं।

विद्यार्थियों में विलम्बन व्यवहार की प्रवृत्ति बहुत अधिक पायी जाती है। लगभग 80–95 प्रतिशत विद्यार्थी अपने प्रतिदिन के कार्यों को पूर्ण करने में विलम्बन व्यवहार रखते है। विशेषकर अपने दत्त कार्यों व विषय कार्यों को पूर्ण करने में। उच्च शिक्षा स्तर पर शोध कार्यों को पूर्ण करने में देरी भी विद्यार्थियों की इस प्रवृत्ति के कारण पायी जाती है। विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार व मानसिक स्वास्थ्य में भी सम्बन्ध पाया जाता है। सी., शोभा बी. (2011) ने विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार व मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करने पर ज्ञात किया कि विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार व मानसिक स्वास्थ्य में नकारात्मक सहसम्बन्ध है।

विलम्बन व्यवहार मानव की शैक्षिक उपलब्धि को भी प्रभावित करता है। उच्च शैक्षिक उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों की नियमितता, निरन्तरता व समयबद्धता आवश्यक है जबकि विलम्बन व्यवहार के कारण विद्यार्थी अपने कार्यों को टालते रहते हैं जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि में आशातीत वृद्धि नहीं हो पाती है। एन., लक्ष्मीनारायण, एस., पोटडर एवं जी., रेड्डी एस. (2003) ने स्नातक दंत छात्रों के एक समूह के बीच विलम्बन व्यवहार व अकादमिक प्रदर्शन में सम्बन्ध ज्ञात किया और पाया कि औसत व औसत से अधिक अकादमिक प्रदर्शन वाले विद्यार्थियों में विलम्बन व्यवहार कम था। शर्मा, ममता एवं कौर, गगनदीप (2011) ने लिंग–भेद के आधार पर किशोरों में विलम्बन व्यवहार व शैक्षणिक तनाव का अध्ययन करके पाया कि लिंग–भेद के आधार पर विलम्बन व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं था। शैक्षिक तनाव लड़कों की अपेक्षा लड़कियों में अधिक पाया गया।

अतः प्रस्तुत शोधकर्ताओं ने उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में विलम्बन व्यवहार का अध्ययन करने हेतु इस शोध समस्या का चयन किया।

शोध समस्या

"विद्यार्थियों में विलम्बन व्यवहार : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"

शोध उद्देश्य

(1)उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में विलम्बन व्यवहार का लिंग–भेद के आधार पर अध्ययन।
(2)उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में विलम्बन व्यवहार का विषय–वर्ग के आधार पर अध्ययन।

(3)उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में विलम्बन व्यवहार : स्व जागरुकता के रूप में अध्ययन।
(4)उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार के कारणों का अध्ययन।

शोध परिकल्पना

(1)उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार में लिंग–भेद के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
(2)उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार में विषय–वर्ग के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
(2.1)कला व विज्ञान विषय–वर्ग के विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
(2.2)कला व वाणिज्य विषय–वर्ग के विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
(2.3)विज्ञान व वाणिज्य विषय–वर्ग के विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
(3)उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की विलम्बन व्यवहार के प्रति स्व–जागरुकता में भिन्नता पायी जाती है।
(4)उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार के कारणों में भिन्नता पायी जाती है।

अध्ययन के चर
स्वतंत्र चर – लिंग–भेद व विषय–वर्ग
आश्रित चर – विलम्बन व्यवहार
तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण
विलम्बन व्यवहार – प्रस्तुत शोध में विलम्बन व्यवहार से तात्पर्य विद्यार्थियों के द्वारा विद्यालय से सम्बन्धित विविध कार्यों– कक्षागत कार्य, अध्ययन कार्य, पुस्तकालय कार्य, प्रशासनिक कार्य आदि के संदर्भ में कार्य स्थगन की प्रवृत्ति अर्थात् कार्य को नियत समय पर ना करके आगामी समय पर टालने की प्रवृत्ति से है।

शोध विधि

निर्धारित उद्देश्यों व समस्या के प्रकृति के आधार पर प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण–विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध की जनसंख्या मेरठ जिले में स्थित सी.बी.एस.ई. द्वारा संचालित विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थी है। न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा मेरठ जिले के 5 सी.बी.एस.ई. विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के 180 विद्यार्थियों (90 छात्र व 90 छात्राएँ) का चयन किया गया है।

शोध उपकरण
स्व–निर्मित 'विद्यार्थी विलम्बन व्यवहार मापनी' (SPBS)

प्रदत्त प्रकृति
संख्यात्मक व गुणात्मक।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ
प्रतिशत, मध्यमान, प्रमाप विचलन, टी–टेस्ट।

प्रदत्तों का सारणीयन एवं विश्लेषण

सारणी–1 : विद्यार्थियों में विलम्बन व्यवहार : लिंग भेद के संदर्भ में

लिंग	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	प्राप्त टी–मूल्य	टी सारणी मूल्य		सार्थकता स्तर
छात्र	90	95.21	18.64	2.0	0.01	1.65	*
छात्रा	90	90.07	15.73		0.05	1.97	

' सार्थक, स्वतंत्रता अंश (df) – 178 पर

तालिका से स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर सी.बी.एस.ई विद्यालयों में विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार का छात्रों का मध्यमान 95.21 तथा छात्राओं का मध्यमान 90.07 है। छात्रों का प्रमाप विचलन 18.64 तथा छात्राओं का प्रमाप विचलन 15.73 है।

प्राप्त माध्यों के अन्तर की सार्थकता जांच करने पर टी–मूल्य 2.0 प्राप्त हुआ है। टी का सारणी मूल्य 0.01 स्तर पर 1.65 तथा 0.05 स्तर पर 1.97 है जबकि प्राप्त टी–मूल्य 2.0 है अतः यह अन्तर 0.01 स्तर पर सार्थक है। उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के विलम्बन व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया गया है। छात्रों में छात्राओं की तुलना में अधिक विलम्बन व्यवहार की प्रवृत्ति पायी गयी है।

परिकल्पना (1) 'उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार में लिंग–भेद के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।'

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर प्रस्तुत परिकल्पना अस्वीकृत होती है अर्थात छात्र छात्राओं के विलम्बन व्यवहार में सार्थक भिन्नता होती है।

सारणी–2 : विद्यार्थियों में विलम्बन व्यवहार : कला एवं विज्ञान विषय वर्ग के संदर्भ में।

विषय–वर्ग	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	प्राप्त टी–मूल्य	टी सारणी मूल्य		सार्थकता स्तर
कला	60	95.12	18.36	3.07	0.01	1.65	*
विज्ञान	60	86.08	13.49		0.05	1.98	

' सार्थक, स्वतंत्रता अंश (df) – 118 पर

तालिका से स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला–वर्ग के विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार का मध्यमान 95.12 व प्रमाप विचलन 18.36 तथा विज्ञान–वर्ग के विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार का मध्यमान 86.08 एवं प्रमाप विचलन 13.49 है। दोनों माध्यों के मध्य अन्तर सार्थकता हेतु ज्ञात टी–मूल्य 3.07 है। जो कि दी गई सारणी मूल्य से अधिक है। अतः उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कला–वर्ग व विज्ञान–वर्ग के विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया जाता है और कला–वर्ग के विद्यार्थी, विज्ञान–वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक विलम्बन व्यवहार रखते हैं।

परिकल्पना (2.1) 'कला व विज्ञान विषय–वर्ग के विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।'

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर प्रस्तुत परिकल्पना अस्वीकृत होती है अर्थात कला एवं विज्ञान विषय–वर्ग के विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार में सार्थक भिन्नता होती है।

सारणी–3 : विद्यार्थियों में विलम्बन व्यवहार : कला व वाणिज्य विषय वर्ग के संदर्भ में

विषय–वर्ग	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	प्राप्त टी–मूल्य	टी सारणी मूल्य		सार्थकता स्तर
कला	60	95.11	18.36	0.48	0.01	1.65	NS
वाणिज्य	60	96.72	18.21		0.05	1.98	

छे असार्थक, स्वतंत्रता अंश (df) – 118 पर

तालिका से विदित होता है कि सी.बी.एस.ई विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर पर कला–वर्ग के विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार का मध्यमान 95.11 व प्रमाप विचलन 18.36 तथा वाणिज्य–वर्ग के विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार का मध्यमान 96.72 एवं प्रमाप विचलन 18.21 है। दोनों माध्यों के अन्तर की सार्थकता का टी–मूल्य 0.48 प्राप्त हुआ है। टी का सारणी मूल्य 0.01 स्तर पर 1.65 तथा 0.05 स्तर पर 1.97 है। जबकि तालिका के अनुसार प्राप्त टी–मूल्य 0.48 है जो टी के सारणी मूल्य से कम है। अतः उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कला–वर्ग व वाणिज्य–वर्ग के विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना (2.2) 'कला व वाणिज्य विषय–वर्ग के विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।'

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर प्रस्तुत परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात कला एवं वाणिज्य विषय–वर्ग के विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी–4 : विद्यार्थियों में विलम्बन व्यवहार : विज्ञान व वाणिज्य विषय वर्ग के संदर्भ में।

विषय–वर्ग	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	प्राप्त टी–मूल्य	टी सारणी मूल्य		सार्थकता स्तर
विज्ञान	60	86.08	13.49	3.63	0.01	1.65	*
वाणिज्य	60	96.72	18.21		0.05	1.98	

' सार्थक, स्वतंत्रता अंश (df) – 118 पर

तालिका से स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर विज्ञान–वर्ग के विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार का मध्यमान 86.08 व प्रमाप विचलन 13.49 है तथा वाणिज्य–वर्ग के विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार का मध्यमान 96.72 एवं प्रमाप विचलन 18.21 है। दोनों माध्यों के मध्य अन्तर के सार्थकता मूल्य के आधार पर टी–मूल्य 3.63 प्राप्त हुआ है। टी का सारणी मूल्य 0.01 स्तर पर 1.65 तथा 0.05 स्तर पर 1.98 है। जो कि दी गई टी सारणी मूल्य से अधिक है। अतः उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान व वाणिज्य–वर्ग के विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया जाता है। विज्ञान–वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में वाणिज्य–वर्ग के विद्यार्थियों में विलम्बन व्यवहार अधिक पाया जाता है।

परिकल्पना (2.3) 'विज्ञान व वाणिज्य विषय–वर्ग के विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।'

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर प्रस्तुत परिकल्पना अस्वीकृत होती है अर्थात विज्ञान एवं वाणिज्य विषय–वर्ग के विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार में सार्थक भिन्नता होती है।

परिकल्पना (2) 'उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार में विषय–वर्ग के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।'

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कला व विज्ञान विषय–वर्ग तथा विज्ञान व वाणिज्य विषय–वर्ग के विद्यार्थियों में अन्तर सार्थक पाया जाता है जबकि कला व वाणिज्य विषय–वर्ग के विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी–5 : विद्यार्थियों में विलम्बन व्यवहार के प्रति स्व–जागरुकता (प्रतिशत में)

विलम्बन व्यवहार : स्व–जागरुकता		लिंग		विषय–वर्ग		
		छात्र (%)	छात्राएँ (%)	कला (%)	विज्ञान (%)	वाणिज्य (%)
विलम्बन व्यवहार : एक समस्या के रूप में प्रत्यक्षीकरण	कभी–नहीं	21.11	17.78	15	26.67	16.67
	कभी–कभी	73.33	70	75	60	80
	सदैव	5.56	12.22	10	13.33	3.33
विलम्बन व्यवहार : अन्य नयी समस्याओं के कारण के रूप में प्रत्यक्षीकरण	कभी–नहीं	35.56	24.44	36.67	25	28.33
	कभी–कभी	51.11	60	48.33	58.33	60
	सदैव	13.33	15.56	15	16.67	11.67
विलम्बन व्यवहार को दूर करने के सम्बन्ध में प्रत्यक्षीकरण	हाँ	73.33	72.22	75	81.67	61.67
	नहीं	23.33	20	16.67	16.67	31.67
	अनिश्चित	3.33	7.78	8.33	1.67	6.67

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की विलम्बन व्यवहार के प्रति स्व–जागरुकता के संदर्भ में अधिकांश छात्र व छात्राएं अपने विलम्बन व्यवहार को 'कभी–कभी' एक समस्या के रूप में प्रत्यक्षीकृत करते हैं। 73.33 प्रतिशत छात्र व 70 प्रतिशत छात्राएं अपने विलम्बन व्यवहार को कभी–कभी ही एक समस्या के रूप में देखते हैं। 51.11 प्रतिशत छात्र व 60 प्रतिशत छात्राओं के लिए विलम्बन व्यवहार, उनके लिए 'कभी–कभी' अनेक नयी समस्याओं के उत्पन्न करता है तथा 73.33 प्रतिशत छात्र व 72.22 प्रतिशत छात्राएं विलम्बन से कार्य को पूर्ण करने के अपने व्यवहार को 'कम' करना चाहते हैं। अतः छात्र–छात्राओं में विलम्बन व्यवहार के प्रति स्व–जागरुकता में भिन्नता नहीं पायी जाती है।

विषय–वर्ग के आधार पर विलम्बन व्यवहार के प्रति स्व–जागरुकता में विभिन्नता पायी गयी है। कला, विज्ञान तथा वाणिज्य–वर्ग के क्रमशः 75 प्रतिशत, 60 प्रतिशत तथा 80 प्रतिशत विद्यार्थी विलम्बन व्यवहार को 'कभी–कभी' ही एक समस्या के रूप में देखते हैं। कला–वर्ग के 48.33 प्रतिशत विज्ञान–वर्ग के 58.33 प्रतिशत विद्यार्थी तथा वाणिज्य–वर्ग के 60 प्रतिशत विद्यार्थियों के लिए कार्य पूर्ण करने में देरी का व्यवहार उनके लिए 'कभी–कभी' अन्य नयी समस्याओं को उत्पन्न करता है तथा 75 प्रतिशत कला–वर्ग के, 81.67 प्रतिशत विज्ञान–वर्ग के तथा 61.67 प्रतिशत वाणिज्य–वर्ग के विद्यार्थी विलम्ब से कार्य को पूर्ण करने के अपने व्यवहार को 'कम' करना चाहते हैं। वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में कला व विज्ञान विषय वर्ग के विद्यार्थी अपने विलम्बन व्यवहार को कम करने के लिए अधिक सचेत पाए गए। अतः उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की विलम्बन व्यवहार के प्रति स्व–जागरुकता में विषय–वर्ग के आधार पर विभिन्नता पायी जाती है।

सारणी–6 : लिंग–भेद के आधार पर विलम्बन व्यवहार के कारणों के प्रति प्रतिक्रियाएँ (प्रतिशत में)

क्रम. संख्या	विलम्बन व्यवहार के कारण	छात्र (%)	छात्राएँ(%)
1	प्राथमिकता क्रम का निर्धारण करने में परेशानी	33.33%	25.65%
2	उपलब्ध समय को सही से व्यवस्थित न कर पाना	47.78%	62.22%
3	विशेष समयावधि पर अत्यधिक कार्य दबाव	50%	16.67%
4	कार्य को कुछ नवीन तरीके से करने की सोच रखना	36.67%	44.44%
5	कार्य के प्रति अभिप्रेरणा का अभाव	34.44%	27.78%
6	कार्य का बहुत कठिन होना	34.44%	44.44%
7	कार्य का महत्वपूर्ण ना होना।	34.44%	16.67%

तालिका से स्पष्ट है कि छात्र–छात्राओं में विलम्बन व्यवहार के भिन्न–भिन्न कारण पाए जाते हैं। 33.33 प्रतिशत छात्र 'प्राथमिकता क्रम का निर्धारण करने में परेशानी' को विलम्बन व्यवहार का कारण मानते हैं जबकि 25.65 प्रतिशत छात्राएँ ही इसे विलम्बन व्यवहार का कारण मानती हैं। अधिकांश छात्राओं (62.22 प्रतिशत) में विलम्बन व्यवहार का मुख्य कारण 'उपलब्ध समय को सही से व्यवस्थित न करना पाना' पाया गया है। 47.78 प्रतिशत छात्र भी इसी कारण को विलम्बन व्यवहार का कारण मानते हैं। 50 प्रतिशत छात्र 'विशेष समयावधि पर अत्यधिक कार्य दबाव' को विलम्बन व्यवहार का मुख्य कारण मानते है जबकि 16.67 प्रतिशत छात्राएं इसे विलम्बन व्यवहार का कारण मानती हैं। छात्रों में 36.67 प्रतिशत 'कार्य को कुछ नवीन तरीके से करने की सोच रखना' विलम्बन व्यवहार का कारण मानते हैं जबकि 44.44 प्रतिशत छात्राएं इसे विलम्बन व्यवहार के कारण के रूप में देखती है। 34.44 प्रतिशत छात्र 'कार्य के प्रति अभिप्रेरणा का अभाव', कार्य का बहुत कठिन होना' और 'कार्य का महत्वपूर्ण ना होना' को विलम्बन व्यवहार का कारण मानते हैं जबकि छात्राओं में इन कारणों में भिन्नता पायी गयी है। 27.78 प्रतिशत छात्राएं ही 'कार्य के प्रति अभिप्रेरणा का अभाव' को विलम्बन व्यवहार के कारण के रूप में देखती हैं जबकि 44.44 प्रतिषतछात्राओं में 'कार्य का बहुत कठिन होना' विलम्बन व्यवहार का कारण पाया गया है। केवल 16.67 प्रतिषत छात्राओं में विलम्बन व्यवहार का कारण 'कार्य का महत्वूपर्ण ना होना' पाया गया। अतः लिंग–भेद के आधार पर विलम्बन व्यवहार के कारणों में भिन्नता पायी गयी है।

शोध निष्कर्ष –

(1)उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार में लिंग–भेद के आधार पर सार्थक अन्तर पाया जाता है। लड़कों में विलम्बन व्यवहार, लड़कियों की तुलना में अधिक पाया गया है।
(2)उच्च माध्यमिक स्तर पर कला व विज्ञान विषय–वर्ग के विद्यार्थियों और वाणिज्य व विज्ञान विषय–वर्ग के विद्यार्थियों में विलम्बन व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया जाता है। कला व वाणिज्य–वर्ग के विद्यार्थियों में विलम्बन व्यवहार, विज्ञान–वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पाया गया है।
(3)उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला व वाणिज्य विषय–वर्ग के विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
(4)उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की विलम्बन व्यवहार के प्रति स्व–जागरुकता में लिंग–भेद के आधार पर भिन्नता नहीं पायी गयी है। जबकि विषय–वर्ग के आधार पर स्व–जागरुकता भिन्न है।
(4)उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के विलम्बन व्यवहार के कारणों में लिंग–भेद के आधार पर भिन्नता पायी गयी है। छात्रों में विलम्बन व्यवहार का मुख्य कारण 'विशेष समयावधि पर अत्यधिक कार्य दबाव' पाया गया जबकि छात्राओं में 'उपलब्ध समय को सही से व्यवस्थित न कर पाना' विलम्बन व्यवहार का मुख्य कारण पाया गया।

विद्यार्थियों के विलम्बित व्यवहार में सुधार हेतु आवश्यक शैक्षिक व्यवस्था

विद्यार्थियों में विलम्बन व्यवहार को कम करने के लिए अध्यापकों को विद्यार्थियों में कुछ आवश्यक योग्यताओं का विकास करना चाहिए तथा अध्यापकों द्वारा शैक्षिक व्यवस्था में भी आवश्यक परिवर्तन किए जाने चाहिए।

विद्यार्थियों के लिए आवश्यक योग्यताएँ

(1)विद्यार्थियों में समय–प्रबन्धन का कौशल विकसित करना चाहिए जिससे विद्यार्थी अपने सभी कार्यों को उचित प्रकार से व्यवस्थित कर सकें।
(2)विद्यार्थियों में लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु आवश्यक प्राथमिकता क्रम के निर्धारण की क्षमता का विकास करना।

(3)विद्यार्थियों में स्वयं में निहित योग्यताओं व क्षमताओं के प्रति सकारात्मक प्रत्यक्षीकरण का विकास करना चाहिए।
(4)विद्यार्थियों में आत्मविश्वास उत्पन्न करना चाहिए जिससे वह किसी भी कार्य को करने से पीछे न हटें व कठिन से कठिन कार्य को भी सफलतापूर्वक कर सकें।
(5)विद्यार्थियों में अपनी समस्याओं को दूसरे के समक्ष रखने की, निःसंकोच अपनी बात कहने की भावना का विकास करना चाहिए। जिससे विद्यार्थी अपनी समस्या का उचित समाधान प्राप्त कर सकें।

शैक्षिक व्यवस्था में परिवर्तन

(1)अध्यापकों को विद्यार्थियों के स्तर को ध्यान में रखते हुए उन्हें दत्त कार्य देना चाहिए।
(2)अध्यापकों को विद्यार्थियों को खुला वातावरण उपलब्ध करना चाहिए जिससे विद्यार्थी अपनी समस्याओं को अध्यापकों के समक्ष रख सकें तथा उनके बारे में आवश्यक विचार विमर्श कर सकें।
(3)अध्यापकों को यह ध्यान में रखना चाहिए कि किसी समय विशेष पर विद्यार्थियों पर अत्यधिक कार्यभार न हो जिससे विद्यार्थी अपने दत्त कार्य व गृह कार्य को सरलता के साथ समय पर पूर्ण कर सकें।
(4)अध्यापकों को विद्यार्थियों को समय–समय पर आवश्यक निर्देशन व परामर्शन कर उनका आवश्यक मार्गदर्शन किया जाना चाहिए।
(5)अध्यापकों को कक्षा में ऐसी शैक्षिक युक्तियों का प्रयोग करना चाहिए जो कि सभी विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुसार हो ताकि वह दिए गए दत्त कार्यों व अन्य कार्यों को समझकर सही समय पर उन्हें पूर्ण कर सकें।
(6)अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों को समय–समय पर आवश्यक अभिप्रेरणा दी जानी चाहिए। जिससे अभिप्रेरित होकर वह अपने कार्यों को सही प्रकार से व्यवस्थित कर सकें व अपने लक्ष्यों के प्राप्ति कर सकें।
(7)अध्यापकों द्वारा ऐसा पाठ्यक्रम तैयार किया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थियों पर अत्यधिक कार्यभार न पड़े व पाठ्यक्रम में कुछ विकल्प विद्यार्थियों के लिए दिए जाने चाहिए जिससे वह अपनी रुचि के अनुसार विषयान्तर्गत कार्यों का चयन कर सकें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

(1)एन. लक्ष्मीनारायण, एस. पोटडर एवं जी, रेड्डी एस (2003), ''भारत में स्नातक दत्त छात्रों के एक समूह के बीच विलम्बन व अकादमिक प्रदर्शन में सम्बन्ध'', जनरल ऑफ डेन्टल एजुकेशन, वॉल्यूम, 77 (4)
http://www.ncbi.htm.nic/gov/pubmed/23576599
(2)सी., शोभा बी. (2011), ''किशोरों का विलम्बन व्यवहार व मानसिक स्वास्थ्य'', जी.सी.टी.ई. जनरल ऑफ रिसर्च एण्ड इक्स्टेन्शन, वॉल्यूम, 6(2), गवर्नमेन्ट कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन, त्रिरुवन्तुरम् (केरल)
(3)शर्मा, ममता एवं कौर गगनदीप (2011), ''लिंग–भेद के आधार पर किशोरों में विलम्बन व्यवहार व शैक्षिक तनाव'', इण्डियन जनरल ऑफ सोशल साइंस रिसर्वेज, वॉल्यूम 8, नं. 1–2
http://rpandeybhu.webs.com/IJSSR//15%20mamta%20sharma.pdf
(4)स्टील, प्रियर्स (2007), ''द नेचर ऑफ प्रोक्रैसटिनेशन : ए मेटा ऐनालिटिकल एण्ड थिअरोटिकल रिव्यू ऑफ क्विन्टिऐन्शन सेल्फ रेग्यूलेटरी फेल्यर'', साइकॉलजिकल बुलेटिन, वॉल्यूम 133, नं. 1, अमेरिकन साइकॉलाजिकल असोसिएशन, अमेरिका
(5)htpp://en-wikipedia.org/wiki/procrastination